अनुपमेय माँ

रचनाकार
मुनि श्री आदित्यसागर जी

प्रकाशक

समर्पण समूह
जैनं वचनं सदा वंदे

अनुपमेय माँ

आशीषनुकंपा	:	श्रमणाचार्य 108 श्री विशुद्धसागर जी महाराज
रचनाकार	:	मुनि श्री आदित्यसागर जी
ग्रन्थ का नाम	:	अनुपमेय माँ
सहयोग	:	श्रमण मुनि सहजसागर जी भूषण जैन (बैंगलूरू), गौरव जैन (मालथोन)
संस्करण	:	प्रथम 1111/2018
अर्थ सहयोग	:	श्रीमती प्रभा–पदमचंद्र जैन (मिठ्या) श्रीमती रश्मि–अनुराग जैन काजल जैन, वरूण जैन, आदर्श जैन, झाँसी
प्राप्ति स्थान	:	समर्पण समूह
एवं प्रकाशक		9827607171 (जबलपुर) 9179050222 (भोपाल) 700459433 (भोपाल) श्रावक संस्कार साहित्य केन्द्र तीर्थधाम श्री नन्दीश्वर द्वीप जिनालय, लालघाटी भोपाल मो. : 9425374897
मुद्रक	:	विकास ऑफसेट प्रिंटर्स एण्ड पब्लिशर्स 45, सेक्टर–एफ, औद्योगिक क्षेत्र,गोविन्दपुरा,भोपाल फोन : 0755-2601952, 9425005624

अनुक्रम

00	माँ में गुरु/गुरु में माँ	1
	कहा नहीं जा सकता	2
	क्या किया	3
	माँ सुन लेती है	4
	पूरा पेट-आधा पेट	5
	हर किसी के पास नहीं	6
	माँ का मूल्य	7
	अनुपमेय माँ	8
	धरती पर माँ से बढ़कर	9
	माँ रूलाती है	10
	माँ के अन्दर	11
	माँ का प्यार	12
	माँ के बिना	13
	माँ का पूरा जीवन	14
	माँ क्या-क्या नहीं करती	15
	माँ एक माध्यम है	16
	माँ कभी दूर नहीं	17
	माँ को नहीं जाना	18
	माँ बनते ही	19
	जब माँ नहीं रहती	20
	बच्चे के ही बारे में	21
	माँ जीवन का मंत्र है	22
	प्यार की भी जरूरत है	23
	अंतर	24
	माँ तो सिर्फ माँ	25
	सुन्दर आसरा	26

अनुक्रम

भूखा रहना	27
माँ जानती है	28
कोई नहीं जान सकता	29
देंगे तो मिलेगा	30
पुकार	31
माँ का दर्द	32
वो ही जानती है	33
माँ भगवान सी है	34
माँ की गोद	35
माँ जिंदा है	36
माँ घर में ही रहती है	37
पिता के विपरीत माँ	38
माँ का जीवन	39
जन्नत नहीं जहन्नुम	40
माँ का कर्ज	41
माँ बहुत विशाल है	42
माँ पाठशाला है	43
माँ जब	44
साँचा रिश्ता	45
निर्माता	46
माँ अपने बच्चे से	47
माँ की कमी	48
माँ नहीं रूठती	49
स्वाद	50
मूरत है माँ	51
माँ और पत्नी	52

अनुक्रम

माँ के लिए	53
माँ पिता से बढ़कर	54
कृतघ्न	55
दुआ बिन सब अधूरा	56
कागज का टुकड़ा	57
जुड़ाव	58
माँ जैसा रिश्ता	59
माँ कभी बुरा नहीं होने देती	60
प्यारी माँ	61
धरती पर भगवान	62
ममता	63
हमेशा ही हकदार	64
माँ / गुरू	65
माँ के लिए कुछ भी नहीं	66
ओझल	67
माँ का पिटारा	68
विचित्र दशा	69
माँ के कारण	70
सदा हमारे साथ	71
चिड़िया की तरह	72
आप नीचे गिर चुके हैं	73
माँ के लिए दान	74
याद आती है माँ	75
अधूरा लेखन	76

समर्पण

जिसने मुझे
अंगुलि पकड़कर चलाया
जिसने मुझे
जीवन के बारे में समझाया
जिसने मुझे
जीवन के
हर मोड़ पर उठाया
जिसने मेरी सेवा में
अपने अमूल्य
समय को गंवाया
जिसने मुझे
माँ सी
ममता देकर
अपना बनाया
और
स्वयं सी
समता देकर
सबका बनाया
उस अनुपमेय देव को
सम्पूर्ण उपमायें समर्पित।

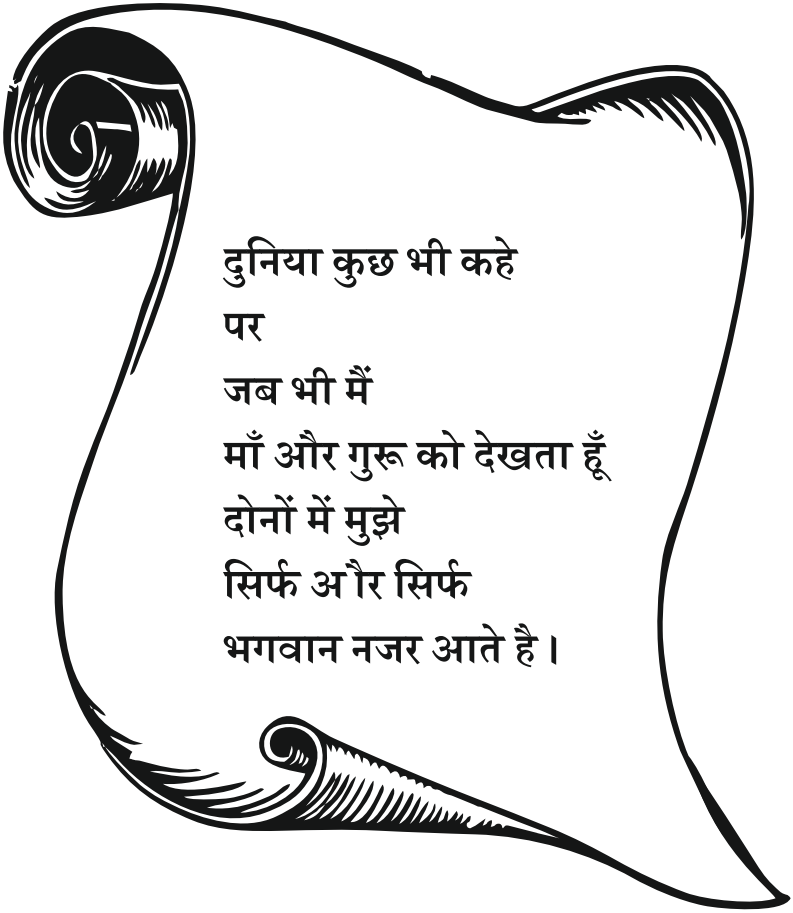

दुनिया कुछ भी कहे
पर
जब भी मैं
माँ और गुरू को देखता हूँ
दोनों में मुझे
सिर्फ और सिर्फ
भगवान नजर आते है।

माँ में गुरू/गुरू में माँ

माँ और गुरू का रिश्ता
बड़ा अनमोल होता है
माँ हमें ममता
गुरू हमें समता सिखाते हैं
माँ हमारे साथ गुरु जैसा व्यवहार करती है
और
गुरु हमारे साथ माँ जैसा
माँ हमें गुरु की तरह शिक्षा देती है
गुरु हमें माँ की तरह प्यार
माँ कभी हमारा बुरा नहीं देख पाती है
गुरु कभी हमारा बुरा नहीं होने देते हैं
शायद इसीलिए मुझे
माँ में गुरु
और गुरु में माँ
नजर आती है।

कहा नहीं जा सकता

जब माँ के आँगन में
उसका बच्चा खेलता है
तब उसकी खुशी को
कोई कह नहीं सकता
जब उसी आँगन में
उसी माँ को
उसी का बेटा
बड़ा होकर
जवाब देता है
पीड़ित करता है
तब उसके
गम को
दुःख को
कहा नहीं जा सकता
इसीलिए
हे माँ !
तेरे गम को तेरी खुशी को
कहा नहीं जा सकता।

क्या किया

आपकी माँ
आपके लिए
क्या-क्या नहीं करती
लेकिन
जरा सोचिए
आपने अपनी माँ के लिए
क्या किया है ?

ooooo

बच्चों की
तोतली आवाज को भी
माँ सुन लेती है
समझ लेती है
क्योंकि
माँ शब्दों को नही
भावों को सुनती है।

पूरा पेट–आधा पेट

माँ अपना
आधा पेट भरकर भी
अपने बच्चों का
पूरा पेटर भर देती है
मगर
बड़े हो जाने पर
वे ही बच्चे
अपना
पूरा पेटर भरकर भी
माँ का
आधा पेट नहीं भर पाते है।

हर किसी के पास नहीं

माँ जैसी ममता
पृथ्वी जैसी समता
समुन्द्र जैसी क्षमता
हर किसी के पास नहीं होती
राम जैसी धीरता
सुभट जैसी वीरता
सिंह जैसी निडरता
हर किसी के पास नहीं होती
सूर्य जैसी प्रखरता
गुलाब जैसी सुंदरता
आम जैसी मधुरता
हर् किसी के पास नहीं होती
कमल जैसी कोमलता
बच्चों जैसी सरलता भी
हर किसी के पास नहीं होती।

माँ का मूल्य

माँ के स्पर्श से ही
मिल जाती है बच्चे को राहत
रोग हो जाते हैं निरोग
और रोम-रोम पुलकित
बच्चा पहचान लेता है
माँ की आहट
और तुरंत ही
हो जाता है नटखट
माँ के मूल्य को
उसके बच्चे से ज्यादा
और कोई समक्ष नहीं सकता
एक वो ही तो है
जो माँ के बिना
जो नही सकता।

अनुपमेय माँ

चिलचिलाती धूप में भी
पानी जैसी शीतल है माँ
मुसीबतों के समय में
पवर्त जैसी सहनशील है माँ
संकटों के बादलों में
घने वृक्ष की छाँव है माँ
पतझड़ के मौसम में भी
सावन जैसी सुहानी है माँ
उपमाओं के बीच में
अनुपमेय है माँ
कुछ और नही
एक अहसास है माँ
बच्चे के लिए
सारी दुनिया है माँ।

धरती पर माँ से बढ़कर

जो पूरी करती है
बच्चों की हर फरमाईशें
ऐसा सांताक्लॉज और कौन होगा
धरती पर माँ से बढ़कर
जो देती है बच्चों को
उत्तम से उत्तम शिक्षा
ऐसा गुरु और कौन होगा
धरती पर माँ से बढ़कर
जो पूरा करती है
पति, बच्चों, सारे परिवार का फरमान
ऐसा भगवान और कौन होगा
धरती पर माँ से बढ़कर
जो करती है
मुश्किलों में मंगलसूत्र का भी दान
ऐसा दानी और कौन होगा
धरती पर माँ से बढ़कर।

माँ रूलाती है

इस दुनिया में
माँ का रिश्ता
कुछ अजीब ही होता है
जब माँ रहती है
तब खुश करके रुलाती
और
जब माँ नहीं रहती है
तब याद आकार रूलाती है।

माँ के अन्दर

जैसा प्यार
जैसा दुलार
एक गाय को
अपने बछड़े के प्रति
होता है
वैसा प्यार
वैसा दुलार
अगर एक माँ के अंदर
अपने बच्चे के प्रति
हो जाए
तो शायद बच्चों को
गर्भ में मरना पड़े।

माँ का प्यार

माँ
पेट भरने के बाद भी
अपने बच्चे को
नखरे मत दिखा खाले ऐसा कहकर
आधी रोटी खाने के लिए मना ही लेती है,
माँ
न थके होने पर भी
अपने बच्चे को
आँखें देख बाहर निकल रही है- ऐसा कहकर
चैन की नींद सुला ही लेती है
माँ
चोट लगने पर भी
अपने बच्चे को
राजा बेटा घोड़ा कूदा है - ऐसा कहकर
दौड़ा ही लेती है
ऐसी और भी कई चीजे हैं
जो न चाहकर भी बच्चा कर देता है
शायद माँ का प्यार
उसे यह सब करने के लिउ
मजबूर कर देता है।

माँ के बिना

माँ के बिना घर का
हर काम रूक जाता है
न तो सुबह का नाश्ता मिल पाता है
न ही बच्चों का टिफिन लग पाता है
न ही बच्चों का बेल्ट मिलता है
न ही पति के मोजे
न तो घर पे झाड़ू लगती है
न ही आँगन में पोंछा
न तो बच्चों की फरमाइशें पूरी हो पाती हैं
न ही परिवार की सुविधाएँ
सचमुच
माँ के बिना
घर का कोना-कोना
स्तब्ध रह जाता है।

माँ क्या–क्या नहीं करती

माँ अपने बच्चों के लिए
क्या-क्या नहीं कर जाती है,
कभी अंजुली में समुद्र
तो कभी पृथ्वी पर तारे ले आती है
बच्चा जो माँगे उसे तुरंत दिलाती है
भले ही साल भर दो साड़ी में रह जाती है
सो जाती है कभी-कभी खाली पेट
पर बच्चे का पेट भरके ही चैन पाती है
स्वयं के लिए कभी कुछ नहीं लेती
पर बच्चे को मन चाही चीज दिलाती है
एक-दिन मरकर ऊपर चली जाती है
पर दुआओं का पिटारा यहीं छोड़ जाती है
सचमुच
माँ अपने बच्चों के लिए
क्या-क्या नहीं कर जाती है।

माँ एक माध्यम है

मैंने
एक बार
एक कपि से पूछा कि
माँ को आप क्या मानते है
उन्होंने झट से कहा-
धरती पर भगतवान का
अवतार है माँ
जब यही प्रश्न
उन्होंने मुझ से पूछा
तब मैंने भी
झट से कह दिया-
माँ भगवान का अवतार नहीं
माँ तो एक माध्यम है
जो हमें
भगवान बनने कका अवसर देती है।

माँ कभी दूर नहीं

माँ कभी अपने बच्चे से
दूर नहीं होती
अगर काई कहे कि
मरने के बाद तो दूर हो जाती है
तब मैं कहूँगा कि
मरकर भी माँ जिन्दा है
और
दूर होर भी माँ
बच्चे के सबसे करीब है।

माँ को नहीं जाना

जिन्होंने अभी
अपनी माँ को
ठीक से नहीं जाना है
नहीं सुना है
नहीं देखा है
वो ही माँ को अनदेखा करते है
अनसुना करते हैं
असफल भी रहते हैं
जिन्होंने जान लिया है
माँ को
उसके मोल को
उन्हीं लोगों की किस्मत
बुलंदियों को पार करती है।

माँ बनते ही

एक लड़की
जब जन्म लेती है
तब उसकी
ढेर सारी उमंगे
ढेर सारे सपने होते हैं
मगर
स्कूल–कॉलेज की
वह चंचल लड़की
जब माँ बनती है
तब न जाने वह
कहाँ खो जाती है।

जब माँ नहीं रहती

माँ
उस सुई की तरह होती है
जो घर के बिखरे मोतियों को
एक धागे में पिरो देती है
इस बात का अहसास
हमें तभी होता है
जब माँ नहीं रहती है
और
मोती बिखरे मिलते हैं।

बच्चे के ही बारे में...

बच्चा चाहे जाग रहा हो
या फिर सो रहा हो
पर माँ उसके बारे में ही सोचती है
बच्चा चाहे खेल रहा हो
या फिर पढ़ रहा हो
पर माँ उसके बारे में ही सोचती है
बच्चा चाहे रो रहा हो
या फिर हँस रहा हो
पर माँ उसके बारे में ही सोचती है
बच्चा माँ के बारे में
भले ही बुरा सोच रहा हो
पर माँ बच्चे के बारे में अच्छा ही सोचती है
बच्चा चाहे जो कुछ भी करे
पर माँ बच्चे के बारे में ही सोचती है।

माँ जीवन का मंत्र है

माँ फूलों का बाग है
माँ है शीत में आग
माँ का मन ही मेघ है
माँ ही सबसे नेक
माँ ही ग्रंथ-पुराण है
माँ ही है धनवान
माँ जीवन का मंत्र है
माँ सांसों का तंत्र
माँ ज्ञान है विज्ञान है
माँ है खूब महान
माँ के बिन इंसान की
नहीं कोई पहचान

प्यार की भी जरूरत है

जब बच्चा छोटा होता है
तब उसे माँ
खाना-पीना
कपड़ा-खिलौना
और खर्च के लिए
पैसे के साथ–साथ
प्यार भी भरपूर देती है
मगर
बड़े होते ही बच्चा माँ को
खाना-पीना
कपड़ा-किराना
और किराया भी भरपूर देता है
पर प्यार देना भूल जाता है
शायद उसे पता नहीं है
माँ को खाने-पीने की ही नहीं
प्यार की भी जरूरत है
क्योंकि
प्यार से बढ़कर माँ के लिए
कोई और चीज नहीं है।

अंतर

जब भी बच्चा
बीमार पड़ता था
तब माँ
सारे काम से
फुरसत ले लेती थी
यहाँ तक कि
आराम से भी
फुरसत ले लेती थी
लेकिन
जब कभी बूढ़ी माँ
बीमार पड़ती है
तब बच्चों को
एक दिन की भी
फुरसत नहीं मिलती है
मेरी समझ में
माँ और बच्चे में
यही अंतर है।

माँ तो सिर्फ माँ

माँ कोई शक्ति नहीं
न ही कोई अभिव्यक्ति है
माँ कोई समुद्र नहीं
न ही कोई किनारा है
माँ कोई सहारा नहीं
न ही कोई साथी है
माँ कोई दुआ नहीं
न ही कोई मन्नत है
माँ कोई कहानी नहीं
न ही कोई किस्सा है
माँ कोई संगीत नहीं
न ही कोई सरगम है
माँ कोई सुबह नहीं
न ही कोई शाम है
माँ कोई गुरू नहीं
न ही कोई भगवान है
माँ कोई सहेली नहीं
न ही कोई जिगरी यार है
माँ तो सिर्फ माँ है।

सुन्दर आसरा

जब भी मैं
किसी बच्चे को
रोते हुए दुखता हूँ तो
मुझे याद आ जाता है
अपना बचपन
मगर जैसे ही
माँ उसे आँचल से लगाकर
चुप करती है
मेरे मुख से
एक ही बात बाहर आती है-
माँ के आँचल से
सुंदर आसरा
दुनिया में कोई और नहीं है।

भूखा रहना

माँ को
भूखा रहना भी पसंद था
जिन बच्चों के लिए
आज
उन्हीं बच्चों ने
माँ को भूखा रहना
सिखा दिया है।

माँ जानती है

एक माँ
जब
रांगोली बनाती है
तो वह जानती है कि
उसकी रांगोली
ज्यादा समय तक
उसके सामने नहीं रहेगी
फिर भी वह रांगोली बनाती है
क्योंकि
वह जानती है
जितने समय तक भी
वह रांगोली रहेगी
उसके मन को
प्रसन्न करती रहेगी।

कोई नहीं जान सकता

जन्म माँ देती है
पर नाम
पिता का चलता है
भोजन बच्चा करता है
पर पेट
माँ का भरता है
गिरता बच्चा है
पर चोट
माँ को लगती है
सोता बच्चा है
पर नींद
माँ की पूरी होती है
नौकरी बच्चे की लगती है
पर खुशी
माँ को होती है
ऐसी और भी
बहुत सी चीजें हैं
जो होती हैं
और होती रहेंगी
पर
इसका कारण
न कोई जान पाया है
न ही जान पायेगा

देंगे तो मिलेगा

जो बेटा
अपनी माँ को
खुश नहीं रख पाता
भगवान भी
कभी उस पर
खुश नहीं होता
सही बात है-
भगवान तभी आपको
कुछ देंगे
जब आप दूसरों को कुछ देंगे।

पुकार

मेरी मेरे भगवान से
एक छोटी सी गुहार
दो दिन किसी को न देना
बस यही पुकार
एक वो
जिस दिन बिन माँ का घर हो
और
दूसरा वा
जिस दिन माँ बिना घर की हो।

माँ का दर्द

एक रोती माँ से
मैंने पूछा-
तू तब भी रोती थी
जब तेरा बेटा छोटा था
और
तू अब भी रोती है
जब कि तेरा बेटा बड़ा हो गया है
माँ के उत्तर को सुन
मैं अनुत्तर हो गया
वो बोली-
पहले बेटा नहीं खाता था
और
अब खाने नहीं देता
इसलिये रोती हूँ।

वो ही जानती है

एक बेटी
माँ की कोख से निकलकर
माँ को खुश करती है,
पिता की गोद में खेलकर
पिता को खुश करती है
पति के जीवन से गुजरकर
पति को खुश करती है
बच्चों की फरमाइशें पूरी करके
बच्चों को खुश करती है
पर इन सब में
वो कब-कब खुश होती है
ये तो वो ही जानती है।

माँ भगवान सी है

मैंने
एक बच्चे से पूछा-
तुम भगवान की पूजा करते हो
या माँ की
उसने कहा-
पूजा तो
भगवान की ही करता हूँ
पर
माँ मेरे लिए
किसी भगवान से कम नहीं है

माँ की गोद

माँ की गोद में
जब भी बच्चा
सिर रखता है
वह अपने सारे कष्टों को भूलकर
सुख-शान्ति का अनुभव करता है
इस बात पर
मुझे तब विश्वास हुआ
जब मैंने
माँ की गोद में
रोते हुए बच्चे को
सिर रखते ही
खुशे होते हुए देखा।

माँ जिंदा है

मैं जब भी
बचपन में रोता था
माँ हमेशा हँसकर कहती थी-
देख तो
क्या हाल बना रखा है
रो-रोकर
आँखेद सुजा डाली है
पूरा का पूरा
बंदर लग रहा है तू
आज
माँ तो नहीं है
पर
जब भी मैं रोता हूँ
उसके शब्द
आज भी उसे जिन्दा कर देते हैं।

माँ घर में ही रहती है

माँ कहीं भी जाये
पर उसे
घर का पूरा ख्याल रहता है
कौन सी चीज
कहाँ रखी है
वह सब बताकर जाती है
कब क्या करना है
क्या नहीं
वह सब लिखकर जाती है
कब क्या खाना है
क्या नहीं
समय-समय पर सब याद दिलाती है
माँ भले ही
घर से जाती है
पर घर में ही रहती है
बाहर जाकर भी वह
घर का पूरा ख्याल रखती है

पिता के विपरीत माँ

माँ
पिता से बिल्कुल विपरीत है
जब पिता डाँटते हैं
तब माँ पुचकारती है
जब पिता पुचकारते है
तब माँ डाँटती है
जब पिता कमजोर नजर आते हैं
तब माँ चट्टान सी अडिग रहते हैं
तब पिता चट्टान सी अडिग रहते हैं
तब माँ कमजोर नजर आती हैं
जब पिता घबराते हैं
तब माँ उन्हें संबल देती है
जब माँ घबराती है
तब पिता उन्हें संबल देते है
ऐसा क्यों हैं
यह तो मैं नहीं जानता
पर माँ
पिता से बिल्कुल विपरीत है।

माँ का जीवन

माँ का जीवन भी
एक चक्की की तरह होता है
वो जीवन भर
दुसरों के लिए
अपना जीवन पीसती है
पर खुद को कुछ नहीं मिलता
सिर्फ प्रताड़ना के।

जन्नत नहीं जहन्नुम

मैंने देखा है
और
अनुभव में पाया है-
जिस-जिस ने
माँ-गुरु को सताया है
उस-उस ने
जन्नत नहीं जहन्नुम को ही पाया है।

माँ का कर्ज

माँ बच्चने के ऊपर
अपना जीवन खर्च कर देती है
पर कभी हिसाब नहीं लेती
लेकिन
बच्चा बड़े होते ही
पल-पल का हिसाब लेता है
मेरा उन बच्चों से
सिर्फ इतना ही कहना है-
तुम दुनियाँ के बराबनर
सोना देकर भी
माँ का कर्ज नहीं चुका सकते हो
मानो या न मानो
तुम सिर्फ अ दा कर सकते हो।

माँ बहुत विशाल है

जब बच्चे
अपनी माँ को
अपने साथ नहीं रख पाते हैं
तब मैं गलती
बच्चों की नहीं
माँ की ही मानता हूँ
क्योंकि
माँ बहूत विशाल है
और
बच्चों का दिल बहुत छोटा है।

माँ पाठशाला है

माँ बच्चे के लिए
वह ढाल है
जो स्वयं सारे वार सहकर
उसकी रक्षा करती है
माँ बच्चे के लिए
वह चन्द्रमा है
जो उसके जीवन को
सदा रोशन करती है
माँ बच्चे के लिए
वह पाठशाला है
जो उसे इंसान के साथ-साथ
भगवान बनने की कला सिखाती है।

माँ जब...

माँ जब छूती है
तब सारी थकान मिट जाती है
माँ जब थपथपाती है
तब सारे सदमें मिट जाते हैं
माँ जब गोद में खिलाती है
तब धरती पर स्वर्ग मिल जाता है
माँ जब आशीष देती है
तब दुनिया भी जीत ली जाती है।

कई सगों को देखा मैंने
सबने धोखा खूब दिया
एक मिली माँ ही तो मुझको
जिसने सहारा खूब दिया
नहीं जातना रिश्ते-नाते
कितने झूठे-साँचे हैं
माँ का रिश्ता मैंने पाया
साँचों में भी साँचा है।

सच्चा रिश्ता

निर्माता

बच्चा भले ही जिद्दी हो
पर माँ उसे दयालू बनाती है
बच्चा भले ही क्रोधी हो
पर माँ उसे समता सिखाती है
बच्चा भले ही चिड़चिड़ा हो
पर माँ उसे खुशहाल बनाती है
बच्चा भले ही डरपोक हो
पर माँ उसे बहादुर बनाती है
बच्चा भले ही कैसा हो
पर एक माँ ही है जो उसे नक इंसान बनाती है।

माँ अपने बच्चे से...

माँ अपने बच्चे से
बेहद प्यार करती है
उसकी पल-पल
परवाह करती है
उसकी सारी बातें
बड़े ध्यान से सुनती है
उसकी पल-पल की फरमाइशें
पल भर में पूरी करती है
उसी के लिए जीती है
उसी के लिए मर जाती है
माँ अपने बच्चे से
बेहद प्यार करती है।

माँ की कमी

माँ
सबकी पल-पल की फरमाइशें
पूरी करती है
मगर कोई भी
माँ की
एक पल की फरमाइश भी
पूरी नही कर सकता है
माँ
सबकी हर पीड़ा को
हरती है
मगर कोई भी
माँ की
पीड़ा नहीं हर सकता है
माँ
सबकी सारी कमी
पूरी करती है
मगर कोई भी
माँ की कमी
पूरी नहीं कर सकता है।

माँ नहीं रूठती

बच्चा कभी
इसी बात पर रूठ जाता है
कि आज
पालक की भीजी क्यों नहीं बनी
तो कभी
इस बात पर रूठ जाता है कि
रोज-रोज पालक की ही भीजी क्यों बनाती
हो
परन्तु
माँ
माँ कभी नहीं रूठती है
क्योंकि
वह बच्चा है
और
मैं माँ हूँ।

स्वाद

भले ही दुनिया का
सबसे श्रेष्ठ रसोइया क्यों न हो
पर
माँ से स्वादिष्ट भोजन
कोई नहीं बना सकता है
नमक-शक्कर-घी तो
सभी डाल देते हैं
पर स्वाद तो
माँ के हाथों से ही मिलता है।

मुरत है माँ

दु:खों में जो हँसती-गाती
जोर-जोर कर खिलखिलाती
पर सब कुछ खुद ही सह जाती
ऐसी सहनशील है माँ
सुबह का काम फटाफट करती
फरीरे से दिन भर डटती
शाम को भी जो कभी न थकती
ऐसी मशीन है माँ
भले थके पर थक न पाती
खुद न खाकनर सब को खिलाती
भूखी रहे पर भी मुस्कुराती
ऐसी समताधारी है माँ
प्यार जो अपना कम न करती
बच्चों को आँचल में रखती
न होकर भी सदा जो रहती
ऐसी प्यारी मूरत है माँ।

माँउ और पत्नी

माँ और पत्नी
हैं तो दोनों ही स्त्री
पर दोनों में उतना ही अंतर है
जितना कि जमीन और आसमान में
पत्नी जिम्मेदारी से रोटी खिलाती है
पर माँ दुलार से
पत्नी की डाँट में परायापन है
पर माँ की डाँट में अपनापन
पत्नी खुद के सुख के लिए रोती है
पर माँ अपनों के दुःख में
पत्नी छोटी-छोटी बातों में नाराज हो जाती
है
पर माँ बड़ी-बड़ी गलतियाँ भी नजरअंदाज
कर देती है
इसीलिए
दोनो मे
जमीन-आसमान का अंतर है
माँ-माँ ही है
और
पत्नी-पत्नी ही है।

माँ के लिए

बच्चों के लिए
माँ के पास
फुरसत के सिवाय कुछ नहीं रहता
माँ के लिए
बच्चों के पास
फुरसत के सिवाय सब कुछ रहता है
बच्चों के लिए
माँ हमेशा
श्रोता बनकर रहती है
माँ के लिए
बच्चे हमेशा
बक्ता बनकर रहते हैं
बच्चों के लिए
माँ अच्छा-अच्छा ही करती है
माँ के लिए
बच्चे सिर्फ अच्छी बातें ही करते हैं।

माँ पिता से बढ़कर है

अगर पिता वृक्ष हैं
जो परिवार को फल देते हैं
तो माँ जड़ है
जो उस वृक्ष को जीवन देती है
अगर पिता समुद्र हैं
जो परिवार को पानी देते हैं।
तो माँ भी नदी है
जो उस समुद्र को पानी देती है
अगर पिता शिल्पी हैं
जो परिवार को गढ़ते हैं
तो माँ भी पर्वत है
जो उस शिल्पी को पत्थर देती है
अगर पिता लेखक हैं
जो हमारे बारे में लिखते हैं
तो माँ भी लेखनी है
जो उस लेखक को लिखने में मदद करती है
पिता चाहे
जितने भी महान हों
पर माँ
हमेशा उनसे बढ़कर ही है।

कृतघ्न

हमें दुनियाँ दिखाने के लिए
माँ
जितना कष्ट सहती है
उसे कहना असंभव है
लेकिन
जन्म लेने के बाद
माँ को
हम अच्छे दिन नहीं दिखा पाये
तो हमसे बड़ा कृतघ्नी
कोई और नहीं होगा।

दुआ बिन सब अधूरा

हमारी सारी तमन्ना
हमारी सारी मेहनत
माँ की दुआ के बिना
कुछ ऐसी ही हैं
जैसे बिन चासनी का लड्डू।

कागज का टुकड़ा

विदेश गए
एक युवक ने
त्यौहार के समय
सब के लिए कुछ न कुछ भेजा
मगर माँ के हिस्से में
सिर्फ कागज का एक टुकड़ा था
फिर भी माँ
सबसे खुश थी
क्योंकि
उस कागज में लिखा था-
माँ
मैं अगले माह घर आ रहा हूँ।

जुड़ाव

माँ की थकान
बच्चों को देखकर उतर जाती है
दवा खाने से नहीं
माँ का पेट
बच्चों को खाता देखकर भर जाता है
जायकेदार भोजन से नहीं
माँ का दिन
बच्चों को देखकर अच्छा हो जाता है
नजारों को देखने से नहीं
माँ को नींद
बच्चों को सोता देखकर ही आती है
डनलप के गद्दों पर नहीं
माँ का दिल
बच्चों के लिए ही धड़कता है
खुद के लिए नहीं
सचमुच
माँ का सब कुछ
उसके बच्चे से ही जुड़ा है
किसी और से नहीं।

माँ जैसा रिश्ता

माँ की गोद सम पवित्र स्थान
दुनिया में कोई और नहीं है
माँ के आँचल सम सुरक्षित स्थान
दुनिया में कोई ओर नहीं है
माँ के आशीष सम दुआ का भंडार
दुनिया में कोई ओर नहीं है
माँ के गोद सम आनंद
दुनिया में कोई और नहीं है
माँ की आँखों सम आइना
दुनिया में कोई और नहीं है
माँ के रिश्ते जैसा रिश्ता
मेरी नजर में
दुनिया में कोई और नहीं है

माँ कभी बुरा नहीं होने देती

एक माँ ही है
जो बच्चे के
लड़खड़ाते कदमों को थामकर
उसे चलना सिखाती है
उसे लड़खड़ाते शब्दों को
भाषा में बाधकर सही कराती है
एक माँ ही है
जो बच्चे के गिरने पर
उसे प्रोत्साहित करती है
उसकी हार पर
जीत का सपना फिर से सजवाती है
एक माँ ही तो है
जो बच्चे को
कभी बुरा नहीं सोचती
अगर कोई बुरा करे तो
बुरा होने नहीं देती।

प्यारी माँ

जो सबको खुशहाल है करती
वो है सबकी प्यारी माँ
जो शीतल सी छाँव को देती
वो है सबकी प्यारी माँ
जो सबको रोशन कर देती
वो है सबकी प्यारी माँ
जो संकट में हिम्मत देती
वो है सबकी प्यारी माँ
जो ना काली जो ना गोरी
वो है सबकी प्यारी माँ
जो पल-पल में दुआ है देती
वो है सबकी प्यारी माँ
जो बिन बोले सब सह लेती
वो है सबकी प्यारी माँ
जो हम सबको सब दे देती
वो है सबकी प्यारी माँ

धरती पर भगवान

माँ कोई नौकरानी नहीं
माँ बच्चों के मन की रानी है
माँ कोई मशीन नहीं
माँ बहुत हसीन है
माँ कोई सामान नहीं
माँ घर की शान है
माँ कोई चौकीदार नहीं
माँ सुंदर किरदान है
माँ कोई दिवाल नहीं
माँ हरदम खुशहाल है
माँ बच्चों की जान है
माँ धरती पर भगवान है।

ममता

माँ भले ही खाले
कुछ भी पेट भर के
मगर उसका पेट तो
बच्चों का पेट भरने पर ही भरता है
माँ भले ही घूम आए
दुनिया भर में
मगर उसका मन तो
बच्चों के इर्द-गिर्द ही घुमता हैं
माँ भले ही सोए
थक-हार के
मगर उसकी नींद तो
बच्चों के सोने पर ही पूरी होती है
माँ भले ही देख रही हो
ताजमहल के नजारों को
मगर उसकी आँखें तो
बच्चो को ही देखती रहती है
माँ भले ही जिए
अपने शरीर में
मगर उसकी दिल तो
बच्चों के शरीर में ही धड़कता है।

हमेशा की हकदार

एक पुरुष
पत्नी से ज्यादा प्रेम करता है
मगर माँ से हमेशा प्रेम करता है
पत्नी से ज्यादा बोलता है
मगर माँ से हमेशा बोलता है
पत्नी को ज्यादा समय देता है
मगर माँ को हमेशा समय देता है
पत्नी को ज्यादा समय देता है
पत्नी के साथ ज्यादा घूमता है
मगर माँ के साथ हमेशा घुमता है
पत्नी की ज्यादा फरमाइशें पूरी करता है
मगर माँ की फरमाइशें हमेशा पूरी करता है
वह जानता है कि
दूसरे के घर से आई स्त्री
ज्यादा की हकदार है
मगर वह यह भी जानता है कि
जन्म देनेवाली माँ
हमेशा की हकदार है।

माँ/गुरु

जिसने तुम्हें
चलना सिखाया हो
जिसने तुम्हें
बोलना सिखाया हो
जिसने तुम्हें
दुनिया देखने को नपरिया जगाया हो
जिसने तुम्हें
पढ़ाया हो लिखाया हो
जिसने तुम्हारे
हर कदम पर हौंसला बढ़ाया हो
वह या तो
माँ हो सकती है
या फिर
तुम्हारे गुरु।

माँ के लिए कुछ भी नहीं

जिस माँ ने हमें
असहनीय पीड़ा सहकर
नव मास गर्भ में रखा
दुनिया दिखाने के लिए
जिस माँ ने हमें
पढ़ाया-लिखाया
चलना सिखाया
अच्छे भविष्य के लिए
जिस माँ ने हमें
गुब्बारे, कपड़े साइकिल
और न जाने क्या-क्या दिलाया
सिर्फ हमारी खुशी के लिए
आज शायद हमारे पास
कुछ मिनिट भी नहीं हैं
उस माँ को
एक घूंट पानी पिलाने के लिए।

ओझल

बचपन में
जब अम्मा
थोड़ी देर के लिए
ओझल हो जाती थी
तब
मन और आँखें
दोनों रो पड़ती थी
लेकिन
बचपन बीतते ही
मन और आँखों ने
रोना छोड़ दिया है
ऐसा नहीं है
कि माँ कभी औझ्ल नहीं होती
लेकिन शायद अब
संवेदनायें ही ओझल हो चुकी हैं
इसलिए
माँ का अहसास भी
ओझल हो चुका है।

माँ का पिटारा

माँ के पिटारे में
हर किसी के लिए
कुछ न कुछ
जरूर रहता है
बच्चों के लिए दुलार
पति कि लिए प्यार
कभी-कभी व्यापार
करती सबकी माँगे साकार
और
खुद के लिए
सिर्फ और सिर्फ
ताउम्र हा- हाकार।

विचित्र दशा

संसार की दशा
बहुत विचित्र है
आज का समय
और भी विचित्र है
एक माँ
दस बच्चों को
पाल लेती थी
आज
दस बच्चे मिलकर
एक माँ को
नहीं पाल पा रहे हैं
सच है
जो भगवान बननेवाला है
उसे कोई नहीं चाहता
जो मिट्टी में मिलनेवाला है
उसे कोई नहीं छोड़ना चाहता।

माँ के कारण

बच्चों के कारण ही
स्त्री बन पाती है माँ
पुरुष बन पाता है पिता
भवन बन जाता है समुंदर
बर्बाद समय होता है आबाद
गुम हो जाती है सारे दुःखो की याद
दिवाल हो जाती है दीवानी
हवा हो जाती है मस्तानी
बच्चों के कारण ही
लौट आता है बचपन
चाहे फिर क्यों न हो उम्र पचपन
लेकिन
माँ के कारण ही
बच्चों का अस्तित्व है
ये बच्चों को
सदा याद रखना चाहिए।

सदा हमारे साथ

हम कहीं भी रहें
पर माँ की ममता
सदा हमारे साथ रहती है
हम कुछ भी करें
पर पिता की नसीहत
सदा हमारे साथ रहती है
हम किसी के भी साथ रहे
पर भीई का अहसास
सदा हमारे साथ रहता है
हम कुछ भी बाँध लें हाथ में
पर बहना की राखी ,
सदा हमारे साथ रहती है
हम सब कुछ भूल सकते हैं
पर अपनों की यादें
सदा हमारे साथ रहती है।

चिड़िया की तरह

जो बच्चे
जन्म देनेवाली माँ को
बडे होने पर
छोड़ देते हैं
मैं उन्हें
उस चिड़िया की तरह ही मानता हूँ
जो पंख आने पर
अपनी माँ को छोड़कर
उड़ जाते हैं।

आप नीचे गिर चुके हैं

जब
गुरु और माँ की
अच्छी सलाह
आपको पसंद न आए
आप बात-बात पर
उन्हें टोकें
पल-पल उनका अपमार करें
उनकी बातों को
नजर अंदाज करें
और
अपने सुख के लिए
उन्हें दु:ख दें
तब
समझ लीजिए
आप बहुत नीचे गिर चुके हैं।

माँ के लिए दान

माँ
अपना चंचल जीवन
आपके गंभीर जीवन के लिए
न्यौछावर कर देती है
ऐसी माँ को
आप अपना जीवन
नहीं दे सकते हैं तो
कम-से-कम
खुशियाँ तो दे ही सकते हैं।

याद आती है माँ

जब हम भूख से तड़प रहे हों
और कुछ खाने को न हो
तब याद आती है माँ
जब हम भरसक मेहनत करते हों
और सफलताह न मिलती हो
तब याद आती है माँ
जब हम बीमार हों
और दवा काम न कर रही हो
तब याद आती है माँ
जब हम मेले में हों
और अपनों से बिछड़ गए हों
तब याद आती है माँ
जब हम अकेले खड़े हों
और कोई भी सहारा न हो
तब याद आती है माँ।

अधूरा लेखन

गुरु और माँ पर
मैं चाहे जितना लिख लूँ
पर वो कभी पूरा नहीं होगा
भुजाओं से तैरकर
समुंदर को पार किया जा सकता है
समुंदर की बूँद तो
फिर भी गिनी नहीं जा सकते हैं
पर गुरु और माँ के गुण
कभी गिने नहीं जा सकते हैं
जैसे-जैसे हम
उनके गुण गिनते चले जाते हैं
वैसे-वैसे उनके गुण
बढ़ते चले जाते हैं।

मुनि श्री द्वारा रचित साहित्य वाङ्मय

✻ प्राकृत अनुवाद-

1. इष्टोपउदेश-भाष्य(3575 श्लोक प्रमाण)

2. स्वरूप-संबोधन-परिशीलन(3975 श्लोक प्रमाण

3. समाधितंत्र-अनुशीलन(5511श्लोक प्रमाण)

4. स्वानुभव-तरंगिणी(1011 श्लोक प्रमाण)

5. निजानुभव- तरंगिणी(2300 श्लोक प्रमाण)

6. आत्मा-बोध (1635 श्लोक प्रमाण)

7. नियम -देशना (अप्रकाशित)

8. बोघ-वाक्यामृत

9. सक्ति-सुधा

10. दिव्व-वयंण

11. भव्व-वयंण

✻ अपभंश अनवाद-

1. अप्पबोहो

2. बोध-वाक्ययामृत

3. सक्ति-सुधा

✻कन्नड़ अनुवाद-

1. सरस्वती स्तोत्रम्

2. उवसग्गहरं थात्तं

3. गणधरबलय- स्तोत्रम्

4. श्री परमर्षि स्वस्ति मंगल पाठ

5. सीयलेस-थोत्तं

6. निर्ग्रंथ गुरु पूजा

✻हिन्दी अनुवाद-

1. झाणज्झयण -पाहुड(श्रीमत्कुन्दकुन्दाचार्य रचित)

✻ संकलन

1. देशना-बिंदु

2. देशना-संचय

3. तत्व-बोध

4. तत्तव-तरगिणी

5. हन्दी-प्राकृत क्रियाकोश

6. हिन्दी-प्राकृत अव्यय कोश

मौलिक -रचना

✻ संस्कृत/प्राकृत/अपभ्रंश

1. सद- बोध-मालिका (अप्रकाशित)

2. जिनशासन सहस्रनाम (अप्रकाशित)

3. गुणकीर्तन (स्तात्र रचना) (अप्रकाशित)

- स्तुत्यष्टकं
- समतभद्र स्तोत्रं
- निजानंद-स्तोत्रं
- चउवीस-तित्थयर-थुदि
- गणहर-थुदि
- गोम्मटदेव-थुदि
- सीयलेस-थुदि
- कम्म-रोग-हर थोत्तं
- विरागट्ठगं
- विसुद्धट्ठगं
- णवगढ़-थुदि
- रिट्ठ-णमि-थोत्तं
- वारसाणुपेक्खु

4. धम्म-सदगं (धर्म-शतक)

5. सद् - भावना पंचविंशति

✻ हिन्दी

- गुरू-शिष्य (भाग-1)
- गुरु-शिष्य (भाग-2)
- अनुपमेय माँ
- मृत्यु
- अतंर्यात्रा
- अंतर्जल्प
- अंतर्ध्वनि
- अंतर्मुखी
- अपने लिए
- अंतर्मन की बातें
- पथ
- अपनी आवाज
- दृष्टान्त से स्वान्त
- सही बातें (410 भागों में) (अप्रकाशित)